चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	17.7.25	3	1-3

पर्यावरण-अनुकूल कीट प्रबंधन तकनीक विकसित करें वैज्ञानिक : प्रो. कांबोज

कीट विज्ञान विभाग ने तकनीकी कार्यक्रम की समीक्षा बैठक आयोजित की

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के कीट विज्ञान विभाग की ओर से बुधवार को वर्ष 2024-25 की अनुसंधान योजनाओं की समीक्षा एवं वर्ष 2025-26 के लिए नई योजनाओं का प्रारूप तैयार करने के लिए तकनीकी कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस मौके पर मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने वैज्ञानिकों को रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता घटाकर जैविक एवं पर्यावरण-अनुकूल कीट प्रबंधन तकनीक विकसित करने की सलाह दी। उन्होंने फसल-प्रणाली आधारित एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) पर जोर देते हुए कीट प्रतिरोधी किस्मों के विकास, जैव-कीटनाशकों एवं मित्र कीटों के संवर्धन की महत्ता बताई। उन्होंने कपास में गुलाबी सुंडी, गन्ने में बोरर और अन्य प्रमुख फसलों में कीट प्रकोप के समयबद्ध प्रबंधन के लिए नवीनतम तकनीकों के विकास की आवश्यकता पर बल दिया।

उन्होंने जलवायु परिवर्तन के कारण बदलते कीट स्वरूपों एवं उनके प्रकोप के प्रति वैज्ञानिकों को सजग रहने को कहा। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि किसानों के लिए ऐसी व्यवस्था बनाई जाए, जिससे किसान सही जानकारी के आधार पर जरूरत के हिसाब से और सुरक्षित तरीके से कीटनाशक छिड़काव कर सकें। इसके लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी आधारित निर्णय समर्थन प्रणाली विकसित करने पर भी जोर दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	17.7.25	2	6

कीटों की निगरानी और पूर्वानुमान प्रणाली को मजबूत बनाना आवश्यक

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग द्वारा गत वर्ष 2024-25 की अनुसंधान योजनाओं की समीक्षा एवं वर्ष 2025-26 के लिए नई योजनाओं का प्रारूप तैयार करने के लिए तकनीकी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बैठक में कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की जबकि अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने ने वैज्ञानिकों को रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता घटाकर जैविक एवं पर्यावरण-अनुकूल कीट प्रबंधन तकनीकें विकसित करने के बारे में सलाह दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	17.7.25	12	3-6

कीट विज्ञान विभाग की ओर से तकनीकी कार्यक्रम संपन्न

कीट प्रबंधन तकनीकें विकसित करने की सलाह

- कीट प्रतिरोधी किस्मों के विकास, जैव-कीटनाशकों एवं मित्र कीटों के संवर्धन की महत्ता बताई

हिसार। एचएयू के कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारी। फोटो: हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग की ओर से गत वर्ष 2024-25 की अनुसंधान योजनाओं की समीक्षा एवं वर्ष 2025-26 के लिए नई योजनाओं का प्रारूप तैयार करने के लिए तकनीकी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बैठक में कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मुख्य अतिथि रहे जबकि जबकि अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर अनुसंधान विभाग के अधिकारी, विश्वविद्यालय के सभी विभागाध्यक्ष एवं कीट विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

कुलपति ने वैज्ञानिकों को रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता घटाकर जैविक एवं पर्यावरण-अनुकूल कीट प्रबंधन तकनीकें विकसित करने की सलाह दी। उन्होंने फसल-प्रणाली आधारित एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) पर जोर देते हुए कीट प्रतिरोधी किस्मों के विकास, जैव-कीटनाशकों एवं मित्र कीटों के संवर्धन की महत्ता बताई। उन्होंने कपास में गुलाबी सुंडी, गन्ने में बोरर तथा अन्य प्रमुख फसलों में कीट प्रकोप के समयबद्ध प्रबंधन के लिए नवीनतम तकनीकों के विकास की आवश्यकता पर बल दिया।

कुलपति ने आशा व्यक्त की कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक इन दिशा-निर्देशों का पालन कर प्रदेश के किसानों के हित में सशक्त योगदान देंगे। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने वैज्ञानिकों को सभी प्रमुख फसलों के हानिकारक कीटों की पहचान, जीवन-चक्र क्षति-लक्षण एवं प्रबंधन पद्धतियों पर आधारित विस्तृत कैटलॉग अथवा एटलस तैयार करने की सलाह दी। कार्यशाला के समापन अवसर पर विभागाध्यक्ष डॉ. सुनीता यादव ने सभी उपस्थित अधिकारियों का आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर डॉ. आरके गुप्ता, डॉ. सुरेन्द्र धनखड़, डॉ. सुरेन्द्र यादव, डॉ. सुरेश सीला व डॉ. रामनिवास श्योकंद उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	17.7.25	8	1-5

कीटों की निगरानी एवं पूर्वानुमान प्रणाली को मजबूत बनाना आवश्यक : प्रो. काम्बोज

कीट विज्ञान विभाग द्वारा तकनीकी कार्यक्रम की समीक्षा बैठक आयोजित

हिसार, 16 जुलाई (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग द्वारा गत वर्ष 2024-25 की अनुसंधान योजनाओं की समीक्षा एवं वर्ष 2025-26 के लिए नई योजनाओं का प्रारूप तैयार करने के लिए तकनीकी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बैठक में कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की जबकि अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर अनुसंधान विभाग के अधिकारी, विश्वविद्यालय के सभी विभागाध्यक्ष एवं कीट विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

कुलपति ने वैज्ञानिकों को रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता घटाकर जैविक एवं पर्यावरण-अनुकूल कीट प्रबंधन तकनीकें विकसित करने की सलाह दी। उन्होंने फसल-प्रणाली आधारित एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) पर जोर देते हुए कीट प्रतिरोधी किस्मों के विकास, जैव-कीटनाशकों एवं मित्र कीटों के संवर्धन

कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारी।

की महत्ता बताई। उन्होंने कपास में गुलाबी सुंडी, गन्ने में बोरर तथा अन्य प्रमुख फसलों में कीट प्रकोप के समयबद्ध प्रबंधन के लिए नवीनतम तकनीकों के विकास की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने जलवायु परिवर्तन के कारण बदलते कीट स्वरूपों एवं उनके प्रकोप के प्रति वैज्ञानिकों को सजग रहने को कहा। उन्होंने कहा कि कीटों की निगरानी एवं पूर्वानुमान प्रणाली को मजबूत बनाना अत्यंत आवश्यक है ताकि क़िसानों को समय पर सटीक सलाह दी जा सके। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि किसानों के लिए ऐसी व्यवस्था बनाई जाए, जिससे क़िसान सही जानकारी के आधार पर जरूरत के हिसाब से और सुरक्षित तरीके से कीटनाशक छिड़काव कर सकें। इसके लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) आधारित निर्णय समर्थन प्रणाली (डिसीजन स्पोर्टस सिस्टम) विकसित करने पर भी जोर दिया।

उन्होंने मधुमक्खियों एवं अन्य परागणकों के संरक्षण को भी अनुसंधान की प्राथमिकता में रखने की आवश्यकता बताई। उन्होंने मधुमक्खी पालन को केवल शहद उत्पादन तक सीमित न रखते हुए मोम, पराग, प्रोपोलिस एवं रॉयल जैली जैसे बहु-मूल्य उत्पादों के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में कार्य करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि किसानों के लाभ के लिए फील्ड स्तर पर मित्र क़ीटों जैसे ट्राइकोग्राम्मा, क्रायसोपा इत्यादि के बड़े पैमाने पर उत्पादन एवं वितरण की प्रभावी योजना बनाई जाए ताकि रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग कम से कम हो सके। कुलपति ने आशा व्यक्त की कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक इन दिशा-निर्देशों का पालन कर प्रदेश के किसानों के हित में सशक्त योगदान देंगे।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने वैज्ञानिकों को सभी प्रमुख फसलों के हानिकारक कीटों की पहचान, जीवन-चक्र, क्षति-लक्षण एवं प्रबंधन पद्धतियों पर आधारित विस्तृत कैटलॉग अथवा एटलस तैयार करने की सलाह दी ताकि किसान एवं विस्तार कार्यकर्ता इसका सहजता से उपयोग कर सकें। उन्होंने कृषि उत्पादन में कीटनाशी अवशेषों की नियमित निगरानी और अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों के अनुरूप उत्पादन पर भी बल दिया। कार्यशाला के समापन अवसर पर विभागाध्यक्ष डॉ. सुनीता यादव ने सभी उपस्थित अधिकारियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ. आरके गुप्ता, डॉ. सुरेन्द्र धनखड़, डॉ. सुरेन्द्र यादव, डॉ. सुरेश सीला व डॉ. रामनिवास श्योकंद उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	17.7.25	3	3-5

कीटों की निगरानी एवं पूर्वानुमान प्रणाली को मजबूत बनाना आवश्यकः प्रो. काम्बोज

कीट विज्ञान विभाग द्वारा तकनीकी कार्यक्रम की समीक्षा बैठक आयोजित

कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारी

हिसार, 16 जुलाई (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग द्वारा गत वर्ष 2024-25 की अनुसंधान योजनाओं की समीक्षा एवं वर्ष 2025-26 के लिए नई योजनाओं का प्रारूप तैयार करने के लिए तकनीकी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बैठक में कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की जबकि अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर अनुसंधान विभाग के अधिकारी, विश्वविद्यालय के सभी विभागाध्यक्ष एवं कीट विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

कुलपति ने वैज्ञानिकों को रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता घटाकर जैविक एवं पर्यावरण-अनुकूल कीट प्रबंधन तकनीकें विकसित करने की सलाह दी। उन्होंने फसल-प्रणाली आधारित एकीकृत कीट प्रबंधन (आई.पी.एम.) पर जोर देते हुए कीट प्रतिरोधी किस्मों के विकास, जैव-कीटनाशकों एवं मित्र कीटों के संवर्धन की महत्ता बताई। उन्होंने कपास में गुलाबी सुंडी, गन्ने में बोरर तथा अन्य प्रमुख फसलों में कीट प्रकोप के समयबद्ध प्रबंधन के लिए नवीनतम तकनीकों के विकास की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने जलवायु परिवर्तन के कारण बदलते कीट स्वरूपों एवं उनके प्रकोप के प्रति वैज्ञानिकों को सजग रहने को कहा। उन्होंने कहा कि कीटों की निगरानी एवं पूर्वानुमान प्रणाली को मजबूत बनाना अत्यंत आवश्यक है ताकि किसानों को समय पर सटीक सलाह दी जा सके। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि किसानों के लिए ऐसी व्यवस्था बनाई जाए, जिससे किसान सही जानकारी के आधार पर जरूरत के हिसाब से और सुरक्षित तरीके से कीटनाशक छिड़काव कर सकें।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने वैज्ञानिकों को सभी प्रमुख फसलों के हानिकारक कीटों की पहचान, जीवन-चक्र क्षति-लक्षण एवं प्रबंधन पद्धतियों पर आधारित विस्तृत कैटलॉग अथवा एटलस तैयार करने की सलाह दी ताकि किसान एवं विस्तार कार्यकर्ता इसका सहजता से उपयोग कर सकें। उन्होंने कृषि उत्पादन में कीटनाशी अवशेषों की नियमित निगरानी और अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों के अनुरूप उत्पादन पर भी बल दिया। कार्यशाला के समापन अवसर पर विभागाध्यक्ष डॉ. सुनीता यादव ने सभी उपस्थित अधिकारियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ. आर.के. गुप्ता, डॉ. सुरेन्द्र धनखड़, डॉ. सुरेन्द्र यादव, डॉ. सुरेश सीला व डॉ. रामनिवास श्योकंद उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	17.7.25	3	3-4

एचएयू में आयोजित कार्यक्रम में कुलपति बोले

कीटों की निगरानी एवं पूर्वानुमान प्रणाली को मजबूत बनाना जरूरी

भास्कर न्यूज़ | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग द्वारा गत वर्ष 2024-25 की अनुसंधान योजनाओं की समीक्षा एवं वर्ष 2025-26 के लिए नई योजनाओं का प्रारूप तैयार करने के लिए तकनीकी कार्यक्रम किया गया। बैठक में कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

कुलपति ने वैज्ञानिकों को रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता घटाकर जैविक एवं पर्यावरण-अनुकूल कीट प्रबंधन तकनीकें विकसित करने की सलाह दी। उन्होंने फसल-प्रणाली आधारित एकीकृत कीट प्रबंधन आईपीएम पर जोर देते हुए कीट प्रतिरोधी किस्मों के विकास, जैव-कीटनाशकों एवं मित्र कीटों के संवर्धन की महत्ता बताई। उन्होंने कपास में गुलाबी सुंडी, गन्ने में बोरर तथा अन्य प्रमुख फसलों में कीट प्रकोप के समयबद्ध प्रबंधन के लिए नवीनतम तकनीकों के विकास की आवश्यकता पर बल दिया। कीटों की निगरानी एवं पूर्वानुमान प्रणाली को मजबूत बनाना अत्यंत आवश्यक है, ताकि किसानों को समय पर सटीक सलाह दी जा सके। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने वैज्ञानिकों को सभी प्रमुख फसलों के हानिकारक कीटों की पहचान, जीवन-चक्र क्षति-लक्षण एवं प्रबंधन पद्धतियों पर आधारित कैटलॉग अथवा एटलस तैयार करने की सलाह दी, ताकि किसान एवं विस्तार कार्यकर्ता इसका सहजता से उपयोग कर सकें। कार्यशाला के समापन पर विभागाध्यक्ष डॉ. सुनीता यादव ने सभी उपस्थित अधिकारियों का आभार व्यक्त किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	16.7.2025	--	--

कीटों की निगरानी एवं पूर्वानुमान प्रणाली को मजबूत बनाना आवश्यक : प्रो. बी.आर. काम्बोज, कीट विज्ञान विभाग द्वारा तकनीकी कार्यक्रम की समीक्षा बैठक आयोजित

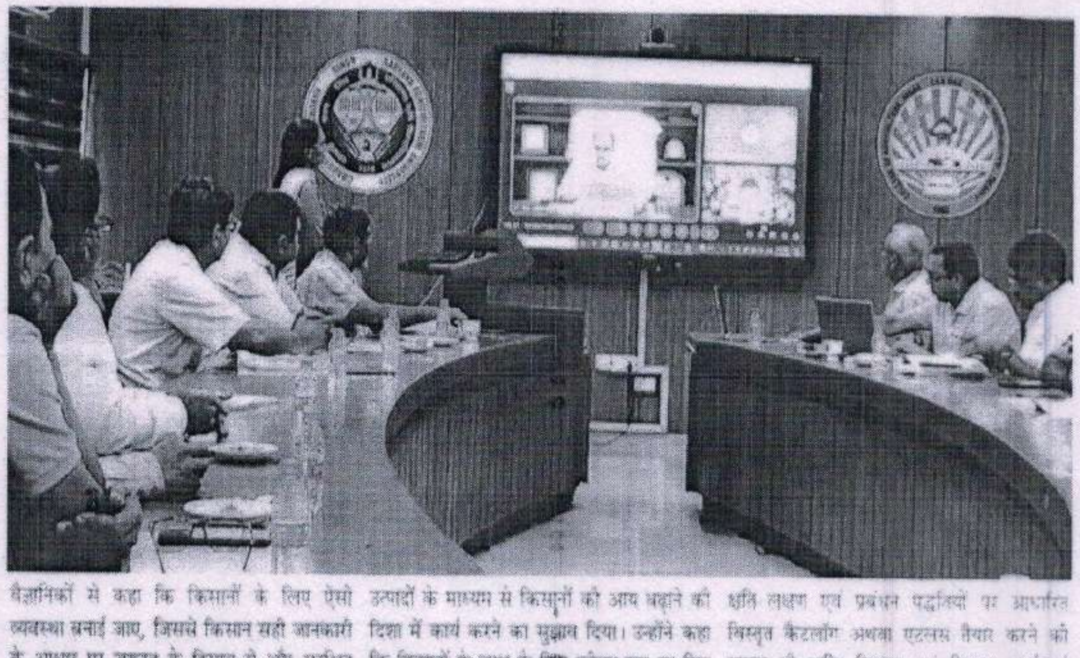

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग द्वारा गत वर्ष 2024-25 की अनुसंधान योजनाओं की समीक्षा एवं वर्ष 2025-26 के लिए नई योजनाओं का प्रारूप तैयार करने के लिए तकनीकी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बैठक में कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की जबकि अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर अनुसंधान विभाग के अधिकारी, विश्वविद्यालय के सभी विभागाध्यक्ष एवं कीट विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक उपस्थित रहे। कुलपति ने वैज्ञानिकों को रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता घटाकर जैविक एवं पर्यावरण-अनुकूल कीट प्रबंधन तकनीकें विकसित करने की सलाह दी। उन्होंने फसल-प्रणाली आधारित एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) पर जोर देते हुए कीट प्रतिरोधी किस्मों के विकास, जैव-कीटनाशकों एवं मित्र कीटों के संवर्धन की महत्ता बताई। उन्होंने कपास में गुलाबी सुंडी, गन्ने में बोरर तथा अन्य प्रमुख फसलों में कीट प्रकोप के समयबद्ध प्रबंधन के लिए नवीनतम तकनीकों के विकास की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने जलवायु परिवर्तन के कारण बदलते कीट स्वरूपों एवं उनके प्रकोप के प्रति वैज्ञानिकों को सजग रहने को कहा। उन्होंने कहा कि कीटों की निगरानी एवं पूर्वानुमान प्रणाली को मजबूत बनाना अत्यंत आवश्यक है ताकि किसानों को समय पर सटीक सलाह दी जा सके। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि किसानों के लिए ऐसी व्यवस्था बनाई जाए, जिससे किसान सही जानकारी के आधार पर जरूरत के हिसाब से और सुरक्षित तरीके से कीटनाशक छिड़काव कर सकें। इसके लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) आधारित निर्णय समर्थन प्रणाली (डिसीजन स्पोर्टस सिस्टम) विकसित करने पर भी जोर दिया। उन्होंने मधुमक्खियों एवं अन्य परागणकों के संरक्षण को भी अनुसंधान की प्राथमिकता में रखने की आवश्यकता बताई। उन्होंने मधुमक्खी पालन को केवल शहद उत्पादन तक सीमित न रखते हुए मोम, पराग, प्रोपोलिस एवं रॉयल जेली जैसे बहु-मूल्य उत्पादों के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में कार्य करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि किसानों के लाभ के लिए फील्ड स्तर पर मित्र कीटों जैसे ट्राइकोग्रामा, क्राइसोपा इत्यादि के बड़े पैमाने पर उत्पादन एवं वितरण की प्रभावी योजना बनाई जाए ताकि रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग कम से कम हो सके। कुलपति ने आशा व्यक्त की कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक इन दिशा-निर्देशों का पालन कर प्रदेश के किसानों के हित में सशक्त योगदान देंगे। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने वैज्ञानिकों को सभी प्रमुख फसलों के हानिकारक कीटों की पहचान, जीवन-चक्र क्षति लक्षण एवं प्रबंधन पद्धतियों पर आधारित विस्तृत कैटलॉग अथवा एटलस तैयार करने की सलाह दी ताकि किसान एवं विस्तार कार्यकर्ता इसका सहजता से उपयोग कर सकें। उन्होंने कृषि उत्पादन में कीटनाशी अवशेषों की नियमित निगरानी और अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों के अनुरूप उत्पादन पर भी बल दिया। कार्यशाला के समापन अवसर पर विभागाध्यक्ष डॉ. सुनीता यादव ने सभी उपस्थित अधिकारियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ. आरके गुप्ता, डॉ. सुरेन्द्र धनखड़, डॉ. सुरेन्द्र यादव, डॉ. सुरेश सीला व डॉ. रामनिवास श्योकंद उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	17-7-25	4	1

हकृवि में पीजी पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा अब तीन को

जासं ● हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में एमएससी एग्रीकल्चर, एमएससी कम्यूनिटी साइंस, मास्टर आफ फिशरीज साइंस (एमएफएससी) तथा मास्टर आफ टेक्नालोजी (एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग) की प्रवेश परीक्षा जो 26 जुलाई को आयोजित की जानी थी। वह अब 3 अगस्त को होगी। परीक्षार्थियों के लिए यह सूचना विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर डाल दी गई है। विवि कुलसचिव एवं परीक्षा नियंत्रक डा. पवन कुमार ने बताया कि उपरोक्त विषयों की प्रवेश परीक्षा एक ही सत्र में आयोजित की जाएगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	17.7.25	9	1

हकृवि में 26 की प्रवेश परीक्षा अब 3 अगस्त को

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में एमएससी एग्रीकल्चर, एमएससी कम्यूनिटी साइंस, मास्टर ऑफ फिशरीज साइंस (एमएफएससी) तथा मास्टर ऑफ टेक्नालोजी (एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग) की प्रवेश परीक्षा जो 26 जुलाई को आयोजित की जानी थी वह अब 3 अगस्त को होगी। यह सूचना विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर डाल दी गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	17.7.25	5	3

हकृवि में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों की 26 जुलाई को होने वाली प्रवेश परीक्षा अब 3 अगस्त को

हिसार, 16 जुलाई (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में एमएससी एग्रीकल्चर, एमएससी कम्यूनिटी साइंस, मास्टर ऑफ फिशरीज़ साइंस (एमएफएससी) तथा मास्टर ऑफ टेक्नालोजी (एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग) की प्रवेश परीक्षा जो 26 जुलाई, 2025 को आयोजित की जानी थी वह अब 3 अगस्त को होगी। परीक्षार्थियों के लिए यह सूचना विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर डाल दी गई है। उल्लेखनीय है कि सीईटी की 26 जुलाई को होने वाली परीक्षा के कारण यह प्रवेश परीक्षा स्थगित की गई है।

यह जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं परीक्षा नियंत्रक डॉ. पवन कुमार ने बताया कि उपरोक्त विषयों की प्रवेश परीक्षा एक ही सत्र में आयोजित की जाएगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	17.7.25	3	3

एचएयू पीजी कोर्सेज प्रवेश परीक्षा अब 26 जुलाई की बजाय 3 अगस्त को होंगी

भास्कर न्यूज | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में एमएससी एग्रीकल्चर, एमएससी कम्यूनिटी साइंस, मास्टर ऑफ फिशरीज साइंस एमएफएससी तथा मास्टर ऑफ टेक्नालोजी एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षा जो 26 जुलाई, 2025 को आयोजित की जानी थी वह अब 3 अगस्त को होगी। परीक्षार्थियों के लिए यह सूचना विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर डाल दी गई है। उल्लेखनीय है कि सीईटी की 26 जुलाई को होने वाली परीक्षा के कारण यह प्रवेश परीक्षा स्थगित की है। यह जानकारी देते हुए विवि के कुलसचिव एवं परीक्षा नियंत्रक डॉ. पवन कुमार ने बताया कि उपरोक्त विषयों की प्रवेश प्ररीक्षा एक सत्र में आयोजित की जाएगी। उम्मीदवार प्रवेश परीक्षा संबंधी सभी महत्वपूर्ण जानकारियां विश्वविद्यालय की वेबसाइट hau.ac.in और admissions.hau.ac.in पर देख सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	16.7.2025	--	--

हकृवि में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों की प्रवेश परीक्षा अब 3 अगस्त को

हिसार (समस्त हरियाणा न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में एमएससी एग्रीकल्चर, एमएससी कम्यूनिटी साइंस, मास्टर ऑफ फिशरीज़ साइंस (एमएफएससी) तथा मास्टर ऑफ टेक्नालोजी (एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग) की प्रवेश परीक्षा जो 26 जुलाई, 2025 को आयोजित की जानी थी वह अब 3 अगस्त को होगी। परीक्षार्थियों के लिए यह सूचना विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर डाल दी गई है। उल्लेखनीय है कि सीईटी की 26 जुलाई को होने वाली परीक्षा के कारण यह प्रवेश परीक्षा स्थगित की गई है। यह जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं परीक्षा नियंत्रक डॉ. पवन कुमार ने बताया कि उपरोक्त विषयों की प्रवेश परीक्षा एक ही सत्र में आयोजित की जाएगी। उम्मीदवार प्रवेश परीक्षा संबंधी सभी महत्वपूर्ण जानकारियां विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर देख सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	16.7.2025	--	--

जलवायु परिवर्तन के कारण बदलते कीट स्वरूपों एवं उनके प्रकोप के प्रति वैज्ञानिक सजग रहें : प्रो. काम्बोज

नभ-छोर न्यूज ⏭ 16 जुलाई

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग द्वारा गत वर्ष 2024-25 की अनुसंधान योजनाओं की समीक्षा एवं वर्ष 2025-26 के लिए नई योजनाओं का प्रारूप तैयार करने के लिए तकनीकी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बैठक में कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की जबकि अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर अनुसंधान विभाग के अधिकारी, विश्वविद्यालय के सभी विभागाध्यक्ष एवं कीट विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक उपस्थित रहे। कुलपति ने वैज्ञानिकों को रासायनिक कीटनाशकों पर निर्भरता घटाकर जैविक एवं पर्यावरण-अनुकूल कीट प्रबंधन तकनीकें विकसित करने की सलाह दी। उन्होंने फसल-प्रणाली आधारित एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) पर जोर देते हुए कीट प्रतिरोधी किस्मों के विकास, जैव-कीटनाशकों एवं मित्र कीटों के संवर्धन की महत्ता बताई। उन्होंने कपास में गुलाबी सुंडी, गन्ने में बोरर तथा अन्य प्रमुख फसलों में कीट प्रकोप के समयबद्ध प्रबंधन के लिए नवीनतम तकनीकों के विकास की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने जलवायु परिवर्तन के कारण बदलते कीट स्वरूपों एवं उनके प्रकोप के प्रति वैज्ञानिकों को सजग रहने को कहा। उन्होंने कहा कि कीटों की निगरानी एवं पूवार्नुमान प्रणाली को मजबूत बनाना अत्यंत आवश्यक है ताकि किसानों को समय पर सटीक सलाह दी जा सके। उन्होंने वैज्ञानिकों से कहा कि किसानों के लिए ऐसी व्यवस्था बनाई जाए, जिससे किसान सही जानकारी के आधार पर जरूरत के हिसाब से और सुरक्षित तरीके से कीटनाशक छिडकाव कर सकें। इसके लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) आधारित निर्णय समर्थन प्रणाली (डिसीजन स्पोर्टस सिस्टम) विकसित करने पर भी जोर दिया। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने वैज्ञानिकों को सभी प्रमुख फसलों के हानिकारक कीटों की पहचान, जीवन-चक्र क्षति-लक्षण एवं प्रबंधन पद्धतियों पर आधारित विस्तृत कैटलॉग अथवा एटलस तैयार करने की सलाह दी कार्यशाला के समापन अवसर पर विभागाध्यक्ष डॉ. सुनीता यादव ने सभी उपस्थित अधिकारियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ. आर के गुप्ता, डॉ. सुरेन्द्र धनखड़, डॉ. सुरेन्द्र यादव, डॉ. सुरेश सीला व डॉ. रामनिवास श्योकंद उपस्थित रहे।